**Purva Mimaansa**
*A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal*
*(Double Blind Peer Reviewed)*
*Vol. 8 No. 1-2, March-Sep. 2017*
*ISSN : 0976-0237*

# अम्बेडकर के विचारों की वाहकः आधुनिक दलित कविता

**डॉ० आराधना**

सार

आधुनिक दलित कविता अत्यन्त साहस तथा आत्मवि वास के साथ दलित मुक्ति में अपना योगदान दे रही है। अम्बेडकर के द्वारा दिखाए गए आद र्ा राष्ट्र के स्वप्न को वास्तविकता का जामा पहनाने के लिए कटिबद्ध दलित कविता में पीड़ा, संघर्ष तथा ओज के स्वर सुनाई पड़ते हैं। तथाकथित सवर्ण साहित्यकारो की कटु आलोचना इनको निरुत्साहित करने के स्थान पर इनके संकल्प को और भी अधिक दृढ़ता प्रदान कर रही है। दलित कविता मनोरंजन का साधन नहीं है। यह तो दलितों के हाड़–माँस तथा रक्त की कविता है। दलितों के जीवन तथा उत्साह को प्रकट करने की कविता है। उनके विकास तथा पुनर्वास की कविता है। दलित मुक्ति संग्राम इन कवियों के लिए एक यज्ञ है जिसमें समिधा की तरह जलने के लिए दलित कवि प्रस्तुत हैं। यह कविता दलितों के आत्मसम्मान को जगाने के लिए प्रयासरत है। उन्हें आत्मसम्मान तथा प्रतिष्ठा के साथ जीने के लिए प्रेरित कर रही है।

मैं उस अतीत को बहुत करीब पाता हूँ
जिसे जिया था तुमने अपने संघर्ष में
तुम्हारे विचारों में
मुखर होता है एक रचनात्मक विप्लव जो समाता है
मेरे रोम रोम में
बाबा तुम मरे नहीं हो
जीवित हो हमारी चेतना में
हमारे संघर्ष में
जो मुक्ति संग्राम लड़ा था तुमने
वह जारी रहेगा उस समय तक
जब तक कि हमारे
मुरझाए पौधों के हिस्से का सूरज
उग नहीं जाता है।1

**(असिस्टैंट प्रोफेसर, गुरू गोबिन्द सिंह कॉलेज फॉर विमैन सैक्टर–26, चण्डीगढ़**

*Vol. 8 No. 1-2, March-Sep. 2017*
*ISSN : 0976-0237*

कँवल भारती की कविता से उद्धृत उपर्युक्त पंक्तियां सच्ची श्रद्धांजलि हैं – दलित आन्दोलन के अद्‌भुत नायक भीमराव अम्बेडकर को। दलितों के जीवन के अन्धकार को दूर करने के लिए प्रयासरत अम्बेडकर का संघर्ष दलित कवियों का प्रेरणा स्रोत है। उनके विचारों को आत्मसात् कर उनके द्वारा दलित मुक्ति के लिए आरम्भ किए गए अभियान को आगे बढ़ाने के लिए दलित साहित्यकारों ने कमर कस ली है। बाबा साहब द्वारा दिखाए गए आदर्श राष्ट्र के स्वप्न को साकार करने के लिए कटिबद्ध दलित कवि की वाणी में पीड़ा है, वेदना है, संघर्ष है और ओज है। अम्बेडकर की जीवनदृष्टि को अपनी कविताओं के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाने के लिए कृतसंकल्प कवि अत्यन्त दृढ़ता तथा विश्वास के साथ आगे बढ़ता चला जा रहा है। साहित्य जगत् की नकारात्मक आलोचनाओं को अनसुना कर अपनी कविताओं के माध्यम से दलितों के जीवन में सूरजमुखी खिलाने के लिए आवश्यक खाद–पानी तथा धूप प्रदान करना ही उसकी कविता का लक्ष्य है। दलित कविता प्रकृति के सुरम्य चित्र खींचने की कविता नहीं है, न ही नारी के अंगों–प्रत्यंगों के चित्रण द्वारा रसास्वाद लेने की कविता है। यह कविता ज़मीनी सच्चाई से जुड़ी हुई है। दलितों के उत्साह तथा जीवन को प्रकट करने की कविता है। दलितों के विकास तथा पुर्नवास की कविता है।

अम्बेडकर सामाजिक न्याय के प्रबल समर्थक थे। स्वतंत्रता, समानता तथा बन्धुत्व नामक तीन तत्त्व उनके आदर्श राष्ट्र की संकल्पना का आधार थे। संविधान निर्माण के समय सामाजिक न्याय ही इनकी दृष्टि के केन्द्र में था। इनका मानना था कि इसी के द्वारा किसी भी राष्ट्र में सामाजिक सद्‌भाव, सामाजिक स्थिरता तथा राष्ट्रीय भावनायें जागृत हो सकती हैं। सामाजिक न्याय की सुदृढ़ नींव पर खड़ा राष्ट्र तेज़ी से विकास की सीढ़ियाँ चढ़ सकता है। अम्बेडकर एक क्रान्तिकारी थे। इन्होंने हिन्दुत्व तथा ब्राह्मण जाति के विरूद्ध लड़ाई का नेतृत्व किया था। जाति व्यवस्था को वे सिरे से खारिज करते थे। इस अनैतिकतापूर्ण व्यवस्था के समापन के लिए वे जीवन भर प्रयास करते रहे। उन्होंने एक नये विधान की स्थापना की, एक नये धर्म को अपनाया। भारत से जाति, सम्प्रदाय, लिंग, धन, पद तथा सत्ता की असमानता को दूर करने के लिए संघर्षरत इस महान् विद्वान को हमारा नमन है।

अम्बेडकर वर्ण व्यवस्था के पोषक वेदों तथा मनुस्मृति का खुले आम विरोध करते थे। इन ग्रंथों ने ही मानव को विभिन्न खाँचों में डालकर दलितों में हीनता बोध भरा है। इन्हीं ग्रंथों से उद्धरण दे–देकर दलितों को प्रताड़ित किया गया। अम्बेडकर ऐसा मानते थे कि ये ग्रंथ समाज में तार्किक दृष्टि उत्पन्न करने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा हैं। इन ग्रंथों द्वारा सवर्णों की आँखों पर पट्टी बाँध दी गई है और जब तक पट्टी नहीं खुलती दलितों की दशा में परिवर्तन नहीं आ सकता। मनुस्मृति को ब्राह्मणों के गढ़ महाराष्ट्र में जलाना इनके इसी विरोध की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति थी। कवि को दलितों के विकास का मार्ग अवरूद्ध करने वाले ग्रंथों की पंक्तियां नश्तर की भाँति कष्टदायक प्रतीत होती हैं। ये ग्रंथ कवि को अपने समाज पर किए गए शोषण की याद दिलाते हैं।

जब–जब तुम गुनगुनाते हो कोई पंक्ति
किसी प्राचीन ग्रंथ से

*Vol. 8 No. 1-2, March-Sep. 2017*
*ISSN : 0976-0237*

मुझे याद आते हैं

अपने पुरखों के रक्त सने जिस्म

भयातुर चेहरे

बोझ से झुकी देह पर नीले निशान2

ये ग्रंथ इनके लिए ईश्वरीय वाक्य नहीं झूठ का पुलिन्दा हैं। उनके शोषण का हथियार हैं। दलितों से होने वाले पशुतुल्य व्यवहार के लिए यही ग्रंथ उत्तरदायी है। दलित कवि कृष्ण परख के अनुसार :–

मनु का मकसद है,

अम्बेडकर को उगने नहीं देना।

अम्बेडकर का मकसद है,

मनु को ज्ञान देना।3

भारत के मूल नागरिक होने के बावजूद देश की मिट्टी, पानी पर दलितों का अधिकार न होना, अम्बेडकर को पीड़ा देता था। अपने ही देश में पराये कर दिए जाने के दर्द को अम्बेडकर ने महात्मा गाँधी से सांझा किया था। अर्जुन की भाँति अम्बेडकर की दृष्टि केवल दलित उत्थान पर केंद्रित थी। इनके लिए आज़ादी के संघर्ष से ज्यादा महत्त्वपूर्ण था दलितों को मानव सुलभ अधिकार दिलवाना। इसी कारण अम्बेडकर को विश्वासघाती, अवसरपरस्त, देशद्रोही तथा अंग्रेज़ों का पिट्ठू कहा गया। वे जानते थे कि महात्मा गाँधी जिस राजनीतिक आज़ादी की बात कर रहे हैं, जिस पंचायती राज व्यवस्था पर गाँवों के विकास का आदर्श सामने रख रहे हैं, वह दलितों के हित में नहीं है। अंग्रेज़ों की दासता से छूटकर, दलित ब्राह्मणवादी व्यवस्था के चंगुल में फँसे रह जायेंगे। इस व्यवस्था में न तो दलितों को शिक्षा मिलेगी और न ही नौकरी। देश के लिए निर्णय लेने के अधिकार में भी उनकी भागीदारी नहीं होगी। आज़ादी के 68 वर्ष बीत जाने के बाद भी दलितों को आज़ादी नहीं मिली है। रामदास 'अकेला' की कविता की निम्न पंक्तियां इसी विडम्बना को वाणी प्रदान करती हैं: –

लोग बड़े फख्र के साथ कहते हैं

देश अपना है

हम स्वाधीन हैं, स्वतन्त्र हैं

हमारा अपना देश है

अपना खेत

अपना अन्न

अपना पानी है

*Vol. 8 No. 1-2, March-Sep. 2017*
*ISSN : 0976-0237*

आज़ादी जिसे हमने चुना है
देखा नहीं
भोगा नहीं
अभी तो हम उन्हीं के खेत–खलिहानों में
पसीना बहाते हैं
उन्हीं के टुकड़े खाते हैं
उन्हीं के घरों को सजाते हैं
उन्हीं के भण्डार भरते हैं
रात–दिन मरते हैं
उन्हीं के जिलाने पर जीते हैं।4

ब्राह्मणवादी व्यवस्था की गिरफ्त में फँसे दलितों की स्थिति को समझने के लिए कृष्ण परख की कविता की निम्न पंक्तियाँ महत्त्वपूर्ण हैः –

मैं दास हूँ, तुम राजा हो।
मैं जनता हूँ, तुम शासक हो।
मैं मज़दूर हूँ, तुम मालिक हो।
मैं वस्त्र हूँ, तुम जिस्म हो
————
मैं गेहूँ हूँ, तुम चक्की हो
मैं बर्तन हूँ, तुम कुम्हार हो
————
मैं शब्द हूँ, तुम भाव हो
मैं दीन हूँ, तुम दयाल हो।5

दलितों का आवासीय पृथकीकरण उनके सामाजिक बहिष्कार का एक ढंग था। अम्बेडकर ऐसा मानते थे कि जब तक गाँवों तथा शहरों के भीतर दलितों को रहने का स्थान नहीं मिलता तब तक उनमें देशभक्ति की भावनायें उत्पन्न नहीं हो सकती। गाँव से बाहर गन्दे नालों के किनारे बसी बस्तियों में रहने की पीड़ा को भुक्त भोगी ही समझ सकता है। इस सन्दर्भ में ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता की पंक्तियां द्रष्टव्य हैं :–

कभी सोचा है
गन्दे नाले के किनारे बसे

*Vol. 8 No. 1-2, March-Sep. 2017*
*ISSN : 0976-0237*

वर्ण व्यवस्था के मारे लोग

इस तरह क्यों जीते हैं?

तुम पराये क्यों लगते हो उन्हें

कभी सोचा है6

अम्बेडकर संघर्ष करते दलितों के उत्साहवर्धन के लिए उन्हें बार–बार यह याद दिलाते थे कि उनके साथ न्याय है इसलिए वे हार नहीं सकते। ब्राह्मणों के विरूद्ध छेड़े गए अभियान को वे आध्यात्मिक युद्ध मानते थे। वे दलितों को शिक्षित होने, संगठित होने और आन्दोलन करने की प्रेरणा देते थे। वे मानते थे कि स्वयं पर विश्वास रखकर तथा आशा का दामन थामकर चलने वाला समुदाय कभी नहीं हारता। मलखान सिंह अम्बेडकर के इसी विचार से प्रेरणा लेकर ब्राह्मणों को तीखे स्वरों में चेतावनी देते हैं :–

सुनो ब्राह्मण

हमारी दासता का सफर

तुम्हारे जन्म से शुरू होता है

और इसका अन्त भी

तुम्हारे अन्त के साथ होगा।7

अम्बेडकर श्रम के विभाजन के विरूद्ध नहीं थे परन्तु भारत में श्रम का विभाजन नहीं श्रमिकों का विभाजन हो रहा था। वे मानते थे कि विभाजन की मानसिकता किसी का भला नहीं कर सकती। अम्बेडकर का मानना था कि भारत को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने के लिए इसके सभी नागरिकों का सहयोग अपेक्षित है। उनका विचार था कि समानता तथा स्वतन्त्रा का अधिकार देकर ही सबको साथ रखा जा सकता है। उनके इसी विचार से सहमत दलित कवि पुकार उठता है :–

अब और मत रचो

विशेषाधिकार और निर्योग्यताओं के मानस

असमता की विद्रूपताएँ

रचो ऐसी पारमिताएँ

कि हम बन सकें एक राष्ट्र।8

अम्बेडकर जानते थे कि शिक्षा ही एक मात्र ऐसा हथियार है जिसकी सहायता से दलितों की स्थिति में सुधार लाया जा सकता है। शिक्षा के कारण ही तो अम्बेडकर जन–जन के मानस को झंझोड़ पाए। भारत के संविधान निर्माता के पद तक पहुँच दलितों के भविष्य को सुधारने के लिए प्रयत्न कर पाए। इन्होंने वेदों के विरूद्ध जाकर दलितों को शिक्षा का अधिकार दिलवाया। असंगघोष की कविता शिक्षा से वंचित रह गए दलित की पीड़ा तथा आने वाली पीढ़ी को शिक्षा

*Vol. 8 No. 1-2, March-Sep. 2017*
*ISSN : 0976-0237*

दिलवाने की प्रतिबद्धता का प्रकटीकरण करती है :–

समय
माँगता है
मुझसे हिसाब
पढ़े क्यों नहीं
नहीं है इसका जवाब
मेरे पास
तुमने अपनी वर्जनाओं से
काट ली थी मेरी जिह्वा
मेरे होंठ ही सी दिये थे
मेरे कानों में
पिघला हुआ शीशा
उड़ेल दिया था
मेरी आँखों में
गर्म सलाखें भी
तुम्हारे ही कहने पर घुसेड़ी गई
तुम्हारी इस करनी पर
मेरी धमनियों में
खौल रहा है, बहता लहू
समय के साथ
इसका
मै दूँगा माकूल जवाब
मेरी जगह
पढ़ेंगे मेरे बच्चे
ज़रूर।9

आज का शिक्षित दलित भाग्यवाद तथा हीनता बोध से ऊपर उठ चुका है। वह अपने हक के लिए आर–पार की लड़ाई के लिए तैयार बैठा है। संगठन की शक्ति का महत्त्व बताते हुए सी० बी० भारती दलितों को उद्‌बोधन प्रदान करते हुए हुँकार उठते हैं :–

आओ हम सब उठा लें कुदाली

*Vol. 8 No. 1-2, March-Sep. 2017*
*ISSN : 0976-0237*

फावड़े और कलम

और दफना दें गहरे

इस जातिवादी, वर्णवादी व्यवस्था को

जिससे फिर से जन्म ले सके आदमी

केवल आदमी

मुकम्मल आदमी ।10

कंवल भारती दलित कविता के विषय में लिखते हुए कहते हैं, "उसकी कविता दमन, अत्याचार, अपमान तथा शोषण के खिलाफ युद्ध गान है। यह स्वतन्त्रता, समानता और लोकतन्त्र की प्रतिष्ठा करती है। इसलिए इसमें समतामूलक और समाजवादी समाज की परिकल्पना है।"11

दलित मुक्ति के लिए प्रयासरत कवि निराश नहीं है। बाबा साहब के विचारों का झण्डा थामे वह जन–जन में क्रान्ति की लौ जगाने के लिए निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है। नामदेव ढसाल की कविता इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है :–

सूरज की ओर पीठ किए, वे शताब्दियों तक यात्रा करते रहे।

अब–अब अंधियारे की ओर यह यात्रा बन्द करनी चाहिए।

और यह कि इस अंधेरे को ढोते–ढोते हमारे पिता अब झुक गए हैं।

अब–अब हमें उस बोझ को उनकी पीठ से हटाना होगा।

इस वैभवशाली शहर को बनाने में हमारा खून बहा है।

इसके बदले में हमें केवल पत्थर खाने को मिले हैं।

अब–अब इस गगनचुम्बी इमारत को हमें उठाना होगा।

हज़ारों सालों के बाद हमें एक सूरजमुखी फूल देने वाला फकीर मिला है।

अब–अब सूरजमुखी के फूल की तरह हमें अपना चेहरा सूरज की ओर कर लेना चाहिए।12

उपर्युक्त विश्लेषण के आलोक में कहा जा सकता है कि अम्बेडकर की विचारधारा ने दलित कवियों को एक दृष्टि प्रदान की है जो उन्हें अपने अधिकारों, आत्मसम्मान तथा प्रतिष्ठा की भाषा बोलने के लिए प्रेरित कर रही है। बाबा साहब द्वारा आरम्भ किए गए दलित मुक्ति आन्दोलन पर आधारित कविता उनके द्वारा बताए गए स्वतंत्रता, बन्धुत्व तथा समानता के मूल्यों की पोषक है। दलित कवि संगठन तथा शिक्षा के महत्व पर बल देकर ओजपूर्ण वाणी द्वारा दलित अस्मिता को जगाकर नये समाज की सरंचना के बाबा साहब द्वारा दिखलाए गए स्वप्न को पूरा करने के लिए कटिबद्ध है।

**संदर्भ :–**

1) कंवल भारती, तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती, रामपुर, बोधिसत्य प्रकाशन, 2013, पृ – 33

2) वाल्मीकि, ओमप्रकाश उद्धृत, सिंह, पी० एन०, अम्बेडकर चिंतन और हिन्दी दलित साहित्य, पंचकूला, आधार प्रकाशन, 2011, पृ – 193
3) कृष्ण परख, उद्धृत हंस, नई दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, अगस्त, 2004, पृ – 191
4) रामदास अकेला उद्धृत सिंह, पी० एन०, अम्बेडकर चिंतन और हिन्दी दलित साहित्य, पृ –196–197
5) कृष्ण परख, उद्धृत हंस, पूर्वोक्त, पृ – 191
6) वाल्मीकि, ओमप्रकाश उद्धृत, सिंह, पी० एन०, अम्बेडकर चिंतन और हिन्दी दलित साहित्य, पूर्वोक्त, पृ – 192
7) मलखान सिंह उद्धृत, वही, पृ – 189
8) कंवल भारती, उद्धृत, सिंह, पी० एन०, अम्बेडकर चिंतन और हिन्दी दलित साहित्य, पूर्वोक्त, पृ – 196
9) असंगघोष उद्धृत, आलोचना, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, अक्टूबर–दिसम्बर, 2013, पृ – 125
10) सी० बी० भारती उद्धृत, सिंह, पी० एन०, अम्बेडकर चिंतन और हिन्दी दलित साहित्य,पूर्वोक्त, पृ – 124
11) कंवल भारती, दलित कविता का संघर्ष, नई दिल्ली, स्वराज प्रकाशन, 2013, पृ – 172
12) नामदेव ढसाल उद्धृत, आलोचना, पूर्वोक्त, पृ – 120

**संदर्भ ग्रन्थ सूची** :–

1) कंवल भारती, दलित कविता का संघर्ष, नई दिल्ली, स्वराज प्रकाशन, 2013
2) माइकल, एस० एम०, आधुनिक भारत में दलित, नई दिल्ली, रावत पब्लिकेशन्स, 2010
3) सांभरिया, रत्न कुमार, दलित समाज की कहानियाँ, नई दिल्ली, अनामिका पब्लिशर्स, 2014
4) सिंह, तेज, दलित समाज और संस्कृति, पंचकूला, आधार प्रकाशन, 2011
5) सिंह, पी० एन०, अम्बेडकर चिंतन और हिन्दी दलित साहित्य, पंचकूला, आधार प्रकाशन, 2011

**पत्रिकायें** :–

1) सिंह, नामवर (सम्पादक), आलोचना, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, अक्टूबर दिसम्बर 2013
2) यादव, राजेन्द्र (संपादक), हंस, नई दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, अगस्त 2004